

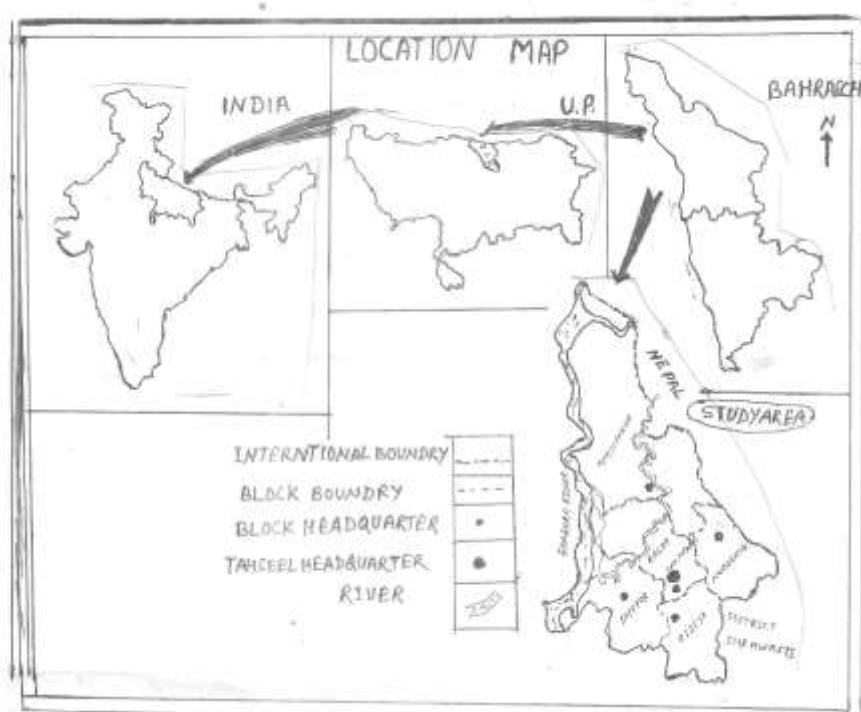
## नानपारा तहसील (जनपद-बहराइच) में सामान्य भूमि उपयोग

इरफान खॉ\*

राज कुमार गुप्ता\*\*

मानव सभ्यता के विकास के प्रथम सोपान से लेकर वर्तमान समय तक अनेकानेक वैज्ञानिक उपलब्धियों एवं तकनीकी सुविधाओं से सम्पन्न मानव सभ्यता के मूल में भूमि का महत्वपूर्ण स्थान है। यह व्यक्ति के आर्थिक स्रोतों, व्यवसायिक क्रियाओं, जीवन शैली एवं उपलब्धियों को ही निर्धारित नहीं करती वरन् उनके सामाजिक, आर्थिक क्रियाकलापों को भी प्रभावित करती है। अतः मानव प्राकृतिक एवं मानवीय परिवेश से सामंजस्य स्थापित करते हुए भूमि संसाधन का अधिकाधिक उपयोग करने का सतत् प्रयास करता है। क्योंकि किसी क्षेत्र का भूमि उपयोग वहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल होता है (सी०वांजिट्टी 1972)। यही कारण है कि किसी स्थान विशेष के भूमि उपयोग की विभिन्न अवस्थाएँ उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक अवस्था का द्योतक होती हैं।

**अध्ययन क्षेत्र**— हिमालय के उपलका में अवस्थित भारत एवं नेपाल की अंतरराष्ट्रीय सीमा से संलग्न जनपद बहराइच की नानपारा तहसील का भौगोलिक विस्तार  $27^{\circ} 42'$  उत्तरी अक्षांश से  $28^{\circ} 24'$  उत्तरी एवं  $81^{\circ} 03'$  पूर्वी देशांतर से  $81^{\circ} 86'$  पूर्वी देशांतर के मध्य है।



इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 1781.184 वर्ग किमी<sup>0</sup> है। प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र 5 विकास खण्डों, 48 न्याय पंचायतों एवं 420 राजस्व ग्रामों में विभक्त है।

\* शोध छात्र, साकेत महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद

\*\* प्रवक्ता, किसान पी०जी० कालेज, बहराइच

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 969830 है प्राकृतिक दृष्टि से यह भाग वन एवं जल संसाधन से सम्पन्न कहा जा सकता है। जहाँ कुल क्षेत्रफल में 12864 हेक्टेयर वन भूमि है। इस क्षेत्र का सामान्य ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण, पूरब की ओर घाघरा यहाँ की प्रमुख जल-प्रवाह प्रणाली है।

**सामान्य भूमि उपयोग** – सामान्य भूमि उपयोग का विश्लेषण तीन मुख्य शीर्षको-कृषि अप्राप्य भूमि, कृषि योग्य भूमि एवं कृषि भूमि के अन्तर्गत किया गया है। 2009-10 में भूमि उपयोग के परस्पर तुलनात्मक वितरण तालिका-1 में प्रदर्शित जिससे स्पष्ट है कि तहसील का सम्पूर्ण क्षेत्रफल-169730 हेक्टेयर है। जिसमें 19154 हे० (11.28 प्रतिशत) कृषि हेतु अप्राप्य है। इसमें 4.6 प्रतिशत जल प्लावित 5.7 प्रतिशत अधिवास परिवहन एवं मार्ग 0.001 प्रतिशत भूमि तथा 0.69 प्रतिशत अन्य कृषि अयोग्य भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित है।

#### तालिका संख्या-1

#### तहसील-नानपारा : सामान्य भूमि उपयोग (2009-10)

भूमि उपयोग संवर्ग	क्षेत्रफल (हे० में)	सम्पूर्ण क्षेत्रफल का प्रतिशत	विभिन्न संवर्गों का प्रतिशत
1. कृषि अप्राप्य भूमि	19154	—	11.28
(अ) जल प्लावित	7977	41.64	4.6
(ब) अधिवास एवं परिवहन मार्ग	9722	50.45	5.7
(स) रेह युक्त ऊसर भूमि	29	0.001	0.001
(द) अन्य कृषि योग्य भूमि	1184	0.061	00.69
2. कृषि योग्य बंजर भूमि	21265	—	12.52
(अ) वन,बाग, चारागाह एवं झाड़ियों के अन्तर्गत	11856	55.77	06.9
(ब) परती भूमि	8187	38.49	4.82
(स) अन्य कृषि योग्य बंजर भूमि	572	0.026	0.033
3. कृषिगत भूमि	129311	—	76.18
(अ) सिंचित भूमि	63159	48.84	37.21
(ब) असिंचित भूमि	66573	51.84	39.2
(स) द्विफसली	65399	50.57	38.53
<b>तहसील नानपारा का योग</b>	<b>1697391</b>		<b>100.00</b>

तहसील के सम्पूर्ण क्षेत्रफल को विभिन्न संवर्गों में विभक्त किया गया है, जिसमें 11.28 प्रतिशत कृषि अप्राप्य भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि 12.52 प्रतिशत तथा कृषिगत भूमि 76.18 प्रतिशत जिसमें सिंचित भूमि 37.21 प्रतिशत और असिंचित भूमि 39.2 प्रतिशत सम्मिलित है।

#### सामान्य भूमि उपयोग का विकास खण्डवार वितरण (2009-10)-

तहसील नानपारा विकास खण्डवार सामान्य भूमि का वितरण (2009-10) का तालिका सं०-2 से स्पष्ट है। कि कृषि अप्राप्य भूमि का सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 11.28 प्रतिशत है जिसमें सर्वाधिक कृषि अप्राप्य भूमि मिंहीपुरवा विकासखण्ड में है, जहाँ सम्पूर्ण का 15.87 प्रतिशत इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित है। उसी सन्दर्भ में बलहा विकास खण्ड में सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 12.81 प्रतिशत तथा क्रमशः 10.24 प्रतिशत नवाबगंज 9.02 प्रतिशत रिसिया तथा 8.64 प्रतिशत शिवपुर, विकास खण्ड में है जो तालिका

नानपारा तहसील (जनपद-बहराइच) में सामान्य भूमि उपयोग

सं0-1 में दर्शाया गया है। विकास खण्ड स्तर पर कृषि अप्राप्य भूमि के वितरण में पर्याप्त भूमि वितरण में पर्याप्त विभिन्नता मिलती है।

कृषिगत भूमि उपयोग के अन्तर्गत कृषि योग्य बंजर भूमि का अध्ययन अद्वितीय स्थान रखता है। इस वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित भूमि से कृषिगत क्षेत्र में भावी विस्तार की सम्भावनाएं निहित रहती है। कृषि योग्य बंजर भूमि का आशय उस भूमि से है जो कृषि हेतु प्राप्त नहीं है किन्तु जिसे अल्प लागत द्वारा कृषिगत भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है (वी0मालिक 19765) भविष्य में वैज्ञानिक अनुसंधानों वांछित परिस्थितियों, उचित संसाधनों की उपलब्धता एवं सरकारी भूमि सुधार कार्यक्रमों द्वारा कृषिगत भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित किया जा सकता है।

इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत 2009-10 में 21265 हे0 (12.52 प्रतिशत) भूमि सम्मिलित थी। अध्ययन क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि का वितरण विकास खण्ड स्तर पर तालिका सं0-2 से स्पष्ट है कि तहसील के विकास खण्डों में कृषि योग्य भूमि का वितरण लगभग असमान है। सर्वाधिक कृषि योग्य बंजर भूमि मिंहीपुरवा विकास खण्ड में है। जो सम्पूर्ण विकास खण्ड के 19.78 प्रतिशत है। इस क्रम में शिवपुर में 11.02 प्रतिशत, नवाबगंज 10.78 प्रतिशत, बलहा 7.78 प्रतिशत एवं सबसे न्यून क्षेत्रफल 4.80 प्रतिशत रिसिया विकास खण्ड में है।

तालिका सं0-2

तहसील-नानपारा : विकास खण्डवार सामान्य भूमि उपयोग (2009-10)

विकास खण्ड का नाम	विकास खण्ड का क्षेत्रफल (हे0 में)	कृषि अप्राप्य भूमि		कृषि योग्य बंजर भूमि		कृषिगत भूमि			
		क्षेत्रफल (हे0 में)	क्षेत्रफल (%) में	क्षेत्रफल (हे0 में)	क्षेत्रफल (%) में	सिंचित भूमि		असिंचित भूमि	
						क्षेत्रफल (हे0 में)	क्षेत्रफल (%) में	क्षेत्रफल (हे0 में)	क्षेत्रफल (%) में
बलहा	30329	3888	12.81	2361	7.78	11421	37.65	12659	41.73
रिसिया	26122	2357	9.02	1254	4.80	14365	54.99	8146	31.18
मिंहीपुरवा	59547	7874	13.22	11783	19.78	16521	27.74	23369	39.24
शिवपुर	29311	2534	8.64	3232	11.02	12689	43.29	10856	37.03
नवाबगंज	24421	2501	10.24	2635	10.78	11183	45.79	8102	33.17
<b>योग-</b>	<b>169730</b>	<b>19154</b>	<b>11.28</b>	<b>21265</b>	<b>12.52</b>	<b>66179</b>	<b>38.99</b>	<b>63132</b>	<b>37.19</b>

स्रोत- अप्रकाशित रजिस्ट्रार कानूनगो, तहसील नानपारा बहराइच

शुद्ध कृषिगत भूमि महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं मानव के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास स्तर का द्योतक है। सामान्य: मानव कृषि कार्य से सम्बन्धित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषिगत भूमि के विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील है।

तहसील नानपारा विकास खण्डवार शुद्ध कृषिगत में सिंचित भूमि का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 66179 हे0 (38.99 प्रतिशत) तालिका संख्या-2 से स्पष्ट है। सर्वाधिक सिंचित भूमि रिसिया विकास खण्ड में है, जहाँ के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 54.99 प्रतिशत इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित है। उसी सन्दर्भ में क्रमशः नवाबगंज 45.79 प्रतिशत, शिवपुर 43.29 प्रतिशत, बलहा 37.65 प्रतिशत तथा मिंहीपुरवा 27.74 प्रतिशत सिंचित है।

तहसील में विकास खण्डवार शुद्ध कृषिगत में असिंचित भूमि का वितरण तालिका सं0-2 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक असिंचित भूमि बलहा विकास खण्ड में जहाँ विकास खण्ड के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 41.73 प्रतिशत इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित है। इसी सन्दर्भ में मिंहीपुरवा विकास खण्ड में 39.24 प्रतिशत, शिवपुर में 37.03 प्रतिशत, नवाबगंज में 33.17 प्रतिशत तथा रिसिया में 31.18 प्रतिशत असिंचित क्षेत्र का उपयोग पाया जाता है।

तहसील में सामान्य भूमि उपयोग 2009-10 कृषि योग्य बंजर भूमि के अन्तर्गत वन, बाग, चारागाह, परती एवं झाड़ियों का भाग 21265 हे० था जो तहसील के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 12.52 प्रतिशत है। तहसील नानपारा में कृषिगत भूमि के अन्तर्गत सिंचित भूमि का भाग 66179 हे० है जो तहसील के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 38.99 प्रतिशत तथा कृषिगत भूमि का 51.17 प्रतिशत है। असिंचित भूमि का भाग कृषिगत भूमि के अन्तर्गत 63132 हे० जो तहसील के सम्पूर्ण के क्षेत्रफल का 37.19 प्रतिशत एवं कुल कृषिगत भूमि का 48.82 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई के प्रमुख स्रोतों में निजी नलकूप, राजकीय नलकूप एवं नहरे सिंचाई के स्रोत हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भूमि उपयोग एवं शस्य परिवर्तन में सिंचाई की भूमि का ध्यानात्मक रूप से प्रकट हुई है फिर भी इसका वांछित स्तर अभी नहीं प्राप्त हो सका है। जिसके लिए अन्य अवस्थापना तत्वों (उर्वरक, बीज, कृषि यन्त्र आदि) का अल्प विकसित होना है परन्तु सिंचाईगत कमियाँ नजर अंदाज नहीं की जा सकती। यद्यपि सिंचाई सुविधा में मात्रात्मक वृद्धि हुई जैसा कि समस्त क्षेत्रफल प्रति चयनित ग्रामों के अध्ययन से स्पष्ट है परन्तु उसमें व्याप्त अनिश्चिता को समाप्त नहीं किया जा सका है।

## REFERENCES

1. Vanzetti, C., "Land use and natural vegetation in International Geography, Edited by W. Peter Adams and Fredrick, M. Helleiner, Toronto University Press 1972, pp.1105-1106
2. Malik V., "The U.P. Land Records Manual", Part-1, Eastern Book Company Lucknow, 1975, PP.61-62.
3. उत्तर प्रदेश भूगोल पत्रिका— अंक—37 संख्या—2 दिसम्बर 2007

